चींटी और पेन

इदरीस शाह

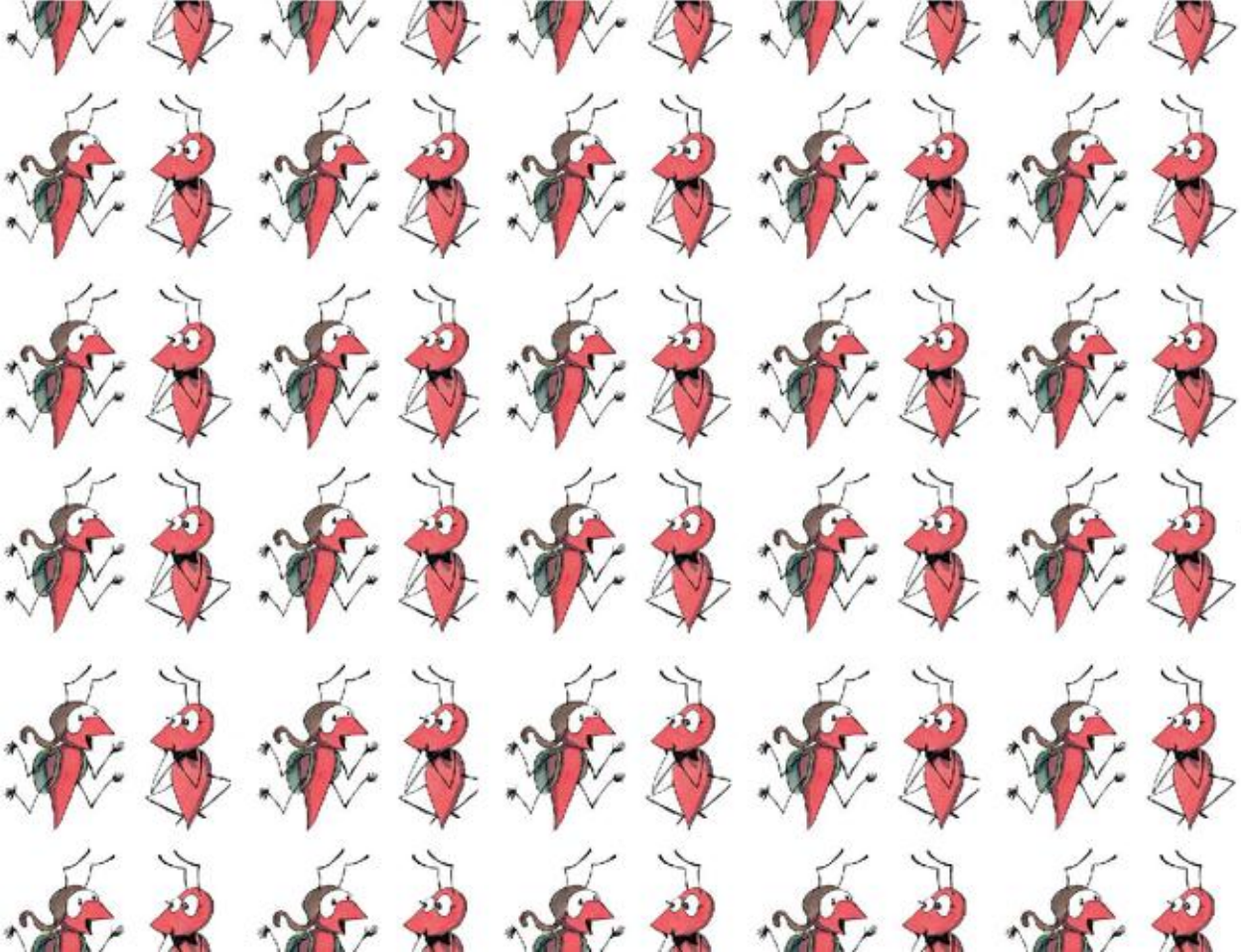

चींटी और पेन

इदरीस शाह

एक दिन एक चींटी गलती के एक कागज़ के ऊपर चलने लगी,

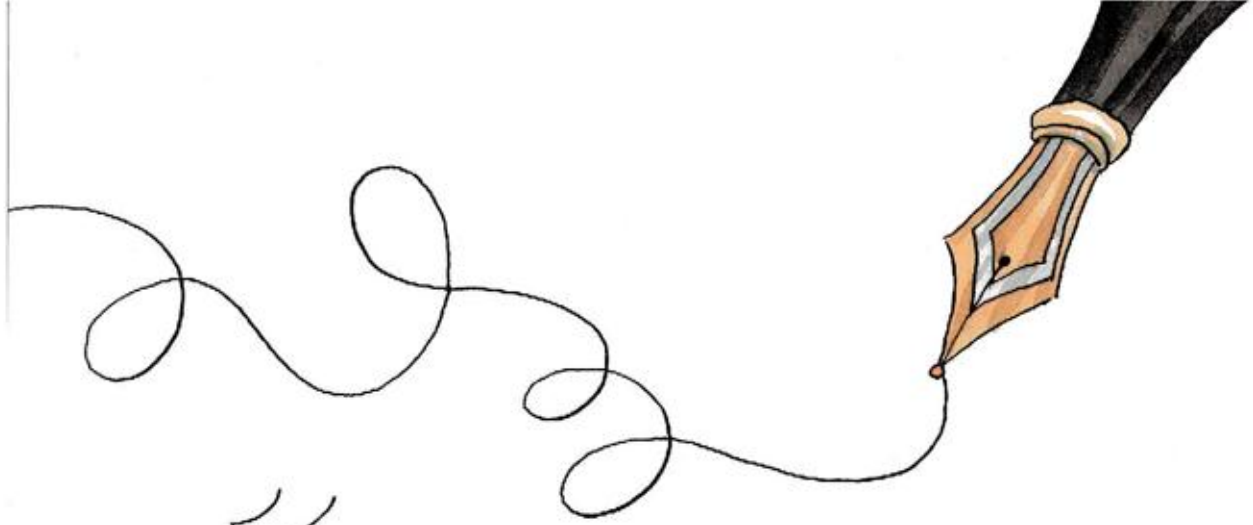

उसने एक पेन को कागज़ पर
काली लकीरे बनाते हुए देखा.

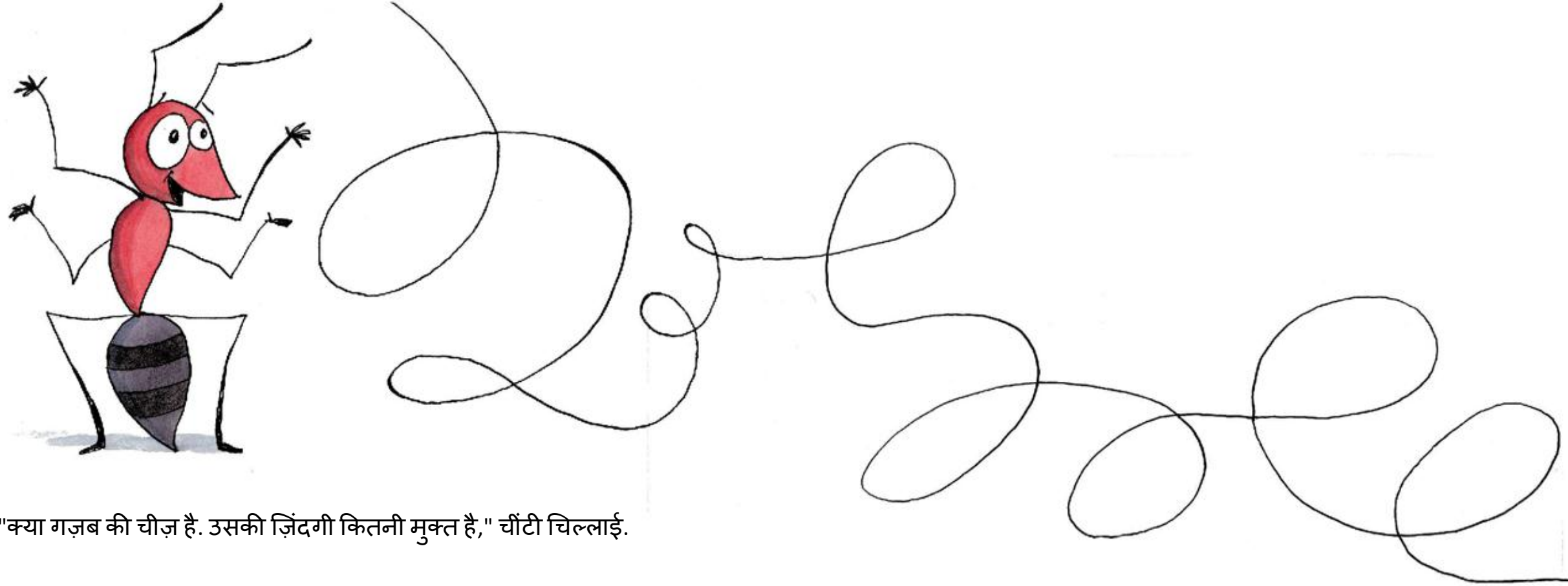

"क्या गज़ब की चीज़ है. उसकी ज़िंदगी कितनी मुक्त है," चींटी चिल्लाई.

"पेन कितनी तेज़ी और ऊर्जा से उस सुन्दर सतह पर अक्षर लिख रहा है.
यह मेहनत तो सारी दुनिया की चींटियों के श्रम के बराबर होगी.

पेन कितने सुन्दर और
लहरदार अक्षर बना रहा है!

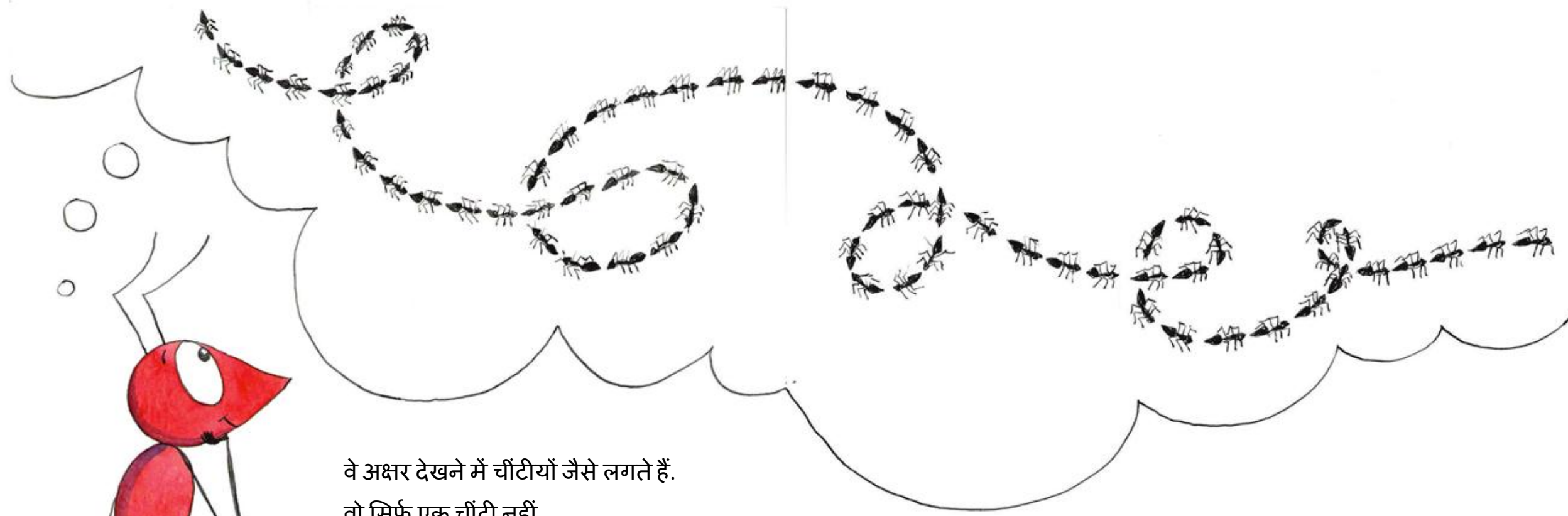

वे अक्षर देखने में चींटीयों जैसे लगते हैं.

वो सिर्फ एक चींटी नहीं,

बल्कि लाखों-करोड़ों चीटियों के दौड़ने जैसे लगते हैं!"

पेन को देखकर चींटी इतनी उत्साहित हुई,
कि वो उस खबर को फ़ैलाने के लिए तुरंत दौड़ी.

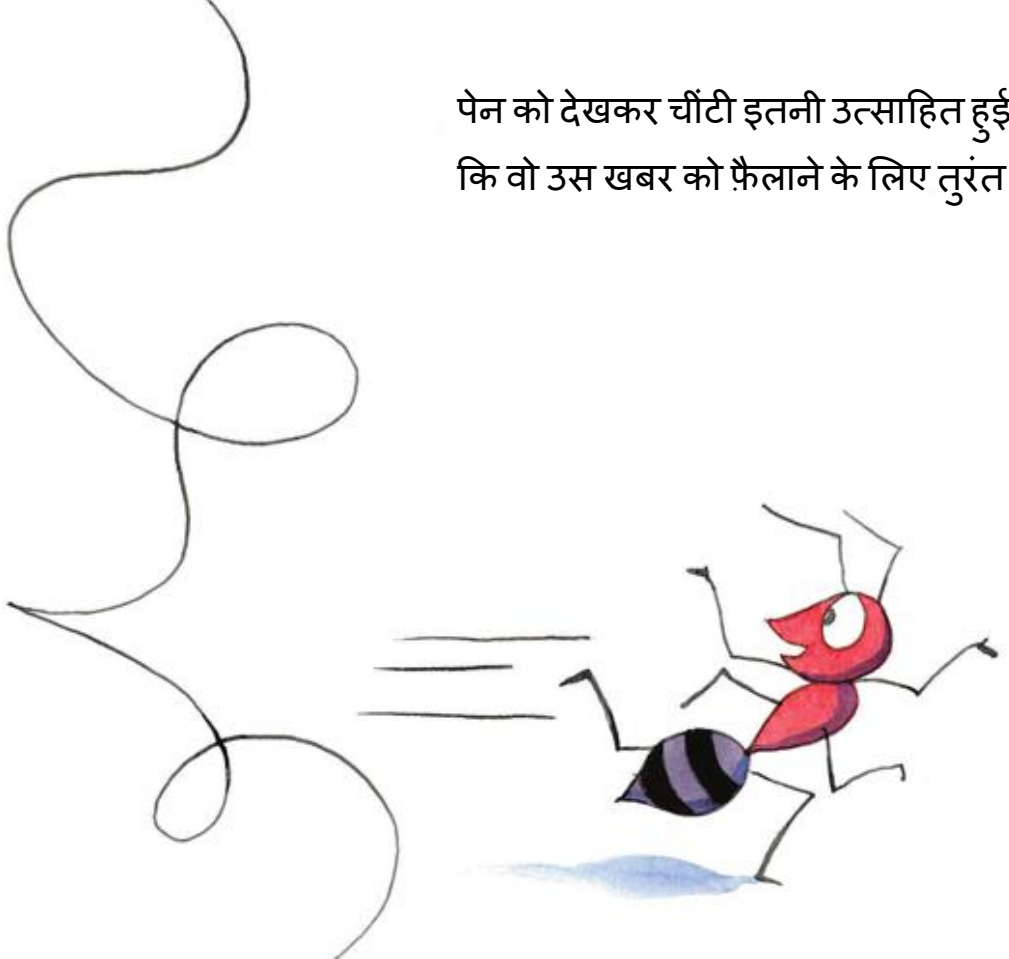

उसे जो सबसे पहली चींटी दिखी,
उसने उसे वो खबर सुनाई.

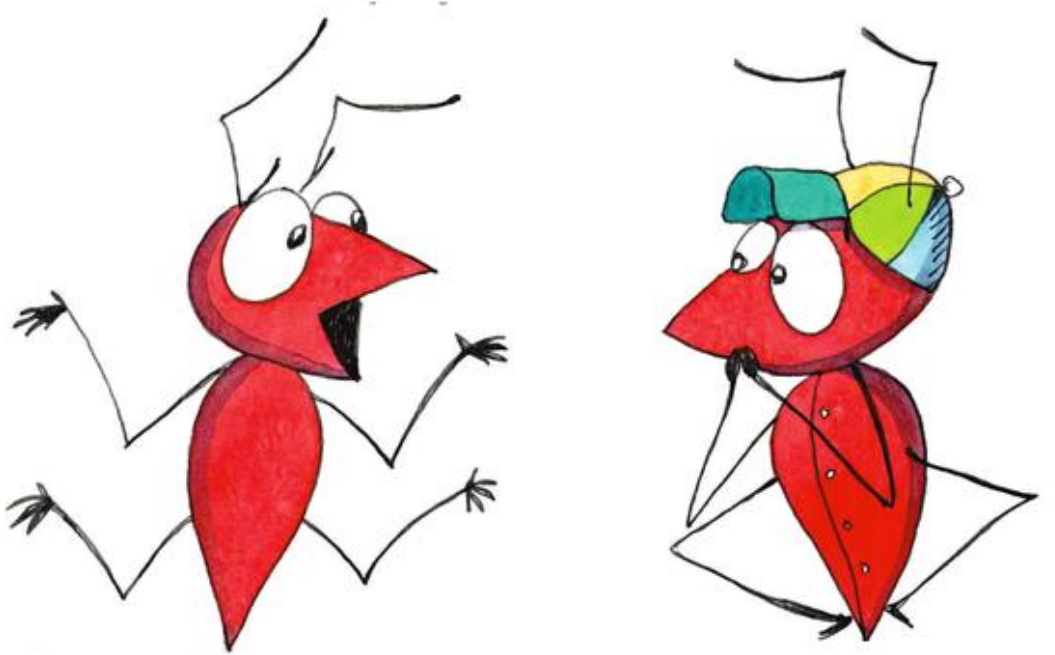

दूसरी चींटी भी पेन द्वारा बनाई लकीरें की चीता-पोती देखकर उतनी ही खुश हुई. उसने पहली चींटी को उसकी खोज और पैनी नज़र के लिए बधाई दी.

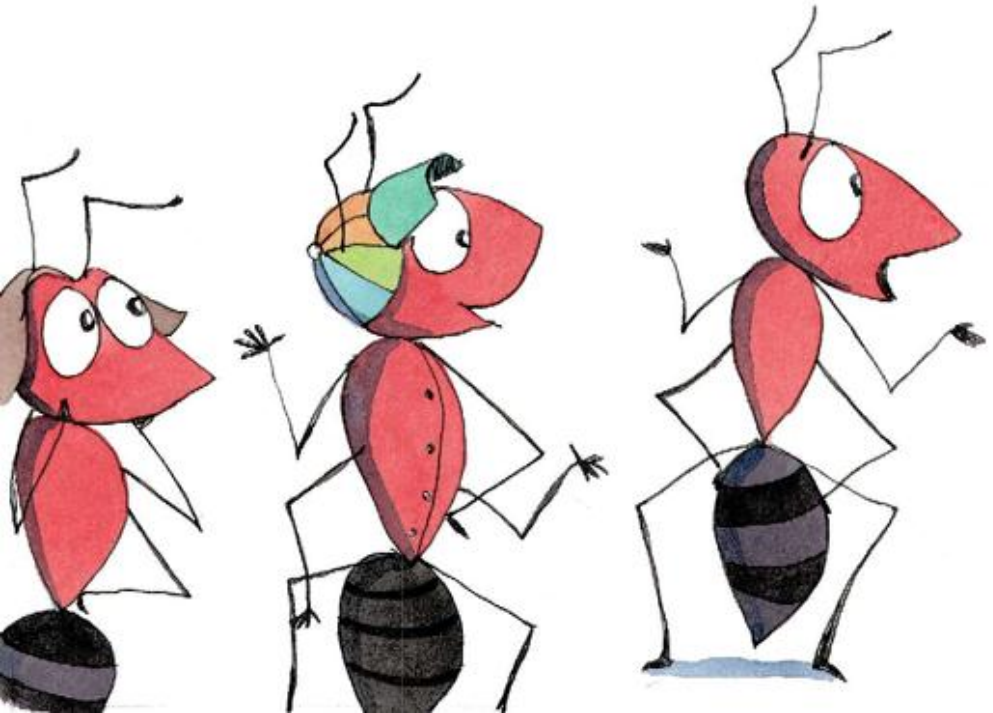

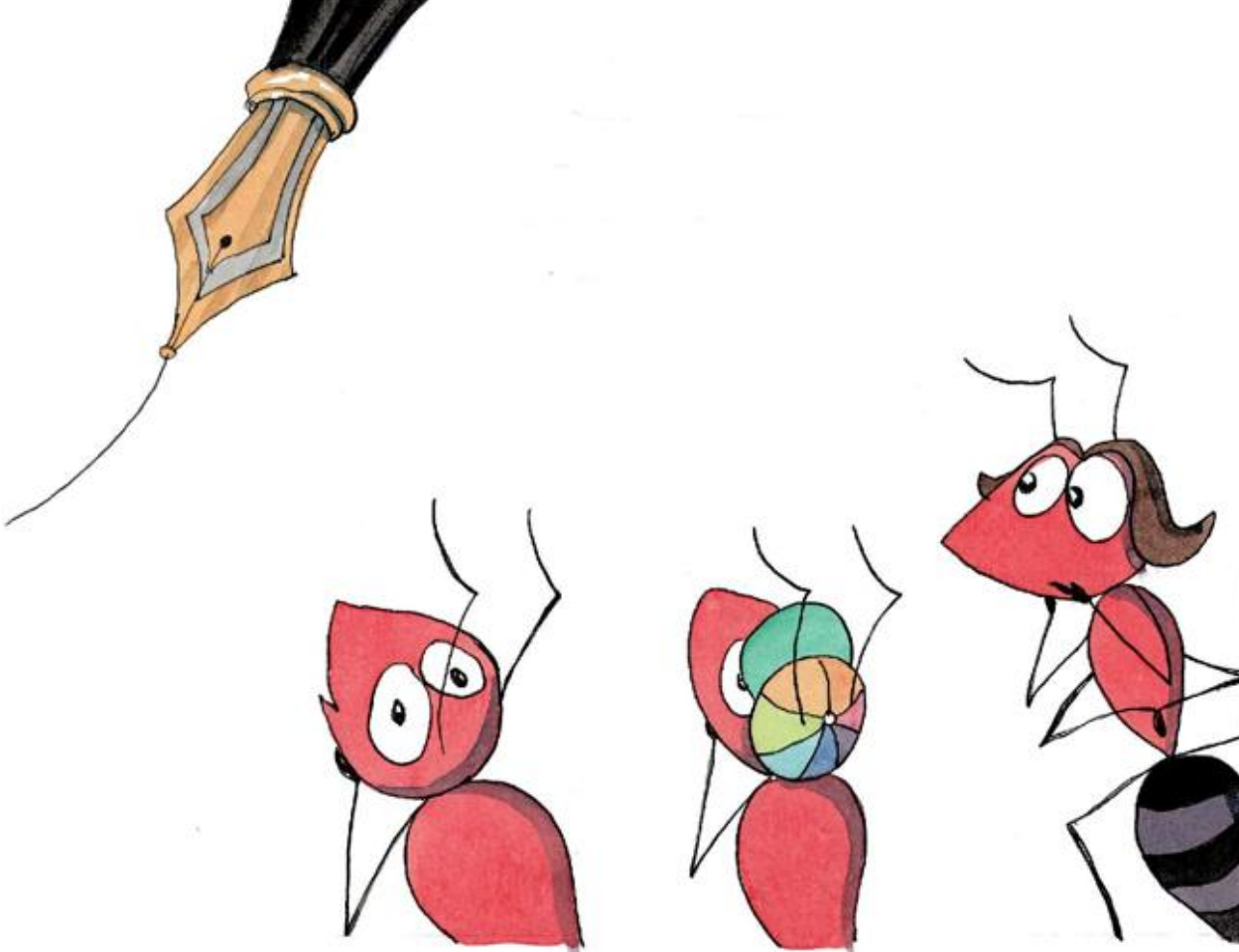

पर तीसरी चींटी पर उस खबर का कोई ख़ास असर नहीं हुआ.
उसने कहा :
"मुझे लगता है कि तुम भावुकता में बह गई हो. तुमने दिमाग लगाकर एक चींटी के दृष्टिकोण से उस मसले का वैज्ञानिक परीक्षण नहीं किया है.

अब क्योंकि तुमने मेरा उस चीता-पोती की ओर ध्यान आकर्षित किया है, इसलिए मैंने उस लकीरें बनाने वाले पेन का अध्ययन किया.

मैं एक चींटी के गहन शोध और पुख्ता वैज्ञानिक सबूतों के आधार पर कह सकती हूँ इस वो पेन अकेले काम नहीं कर रहा है.

क्या तुमने यह बात गौर नहीं की कि वो
पेन आसपास कई चीज़ों से जुड़ा हुआ है?

मेरे वैज्ञानिक निष्कर्ष के अनुसार वो
बाकी चीज़ें पेन को ऊर्जा प्रदान करती हैं.

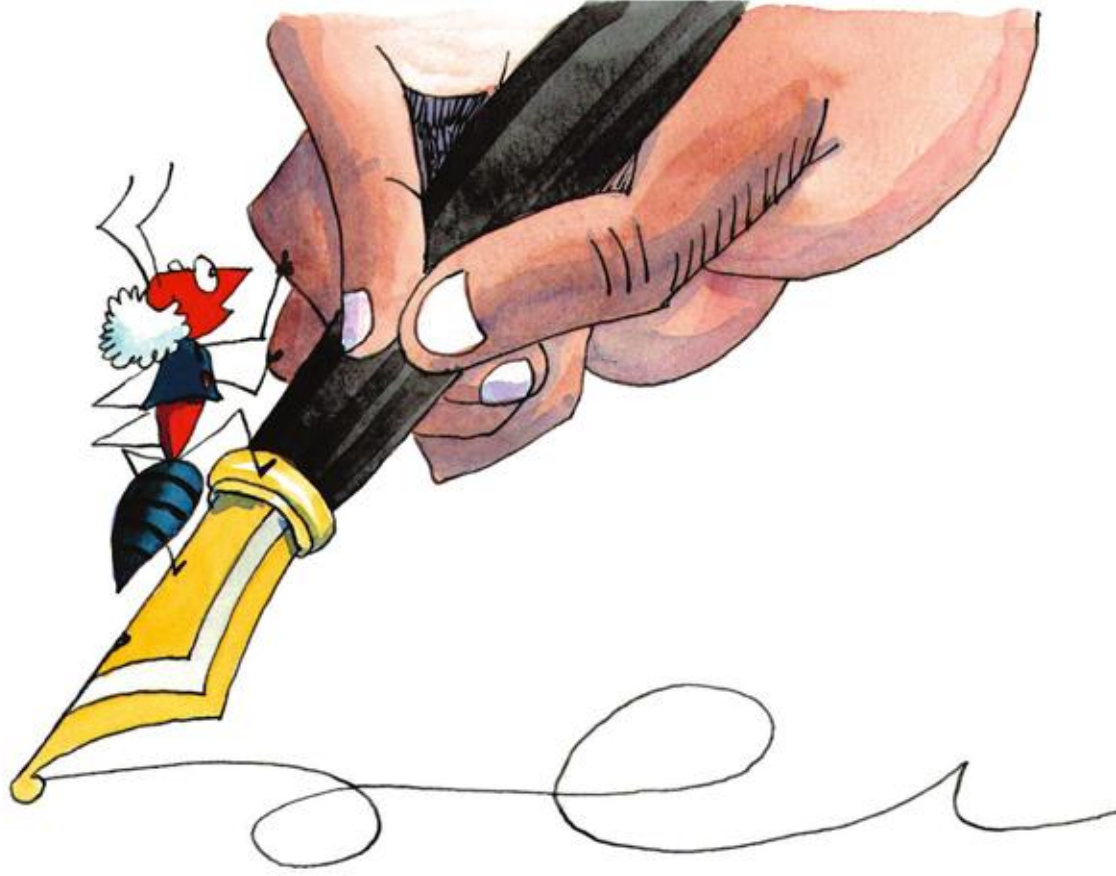

इसलिए जो कोई भी पेन को शक्ति प्रदान कर
रहा है, वही उस चीता-पोती का ज़िम्मेदार है."

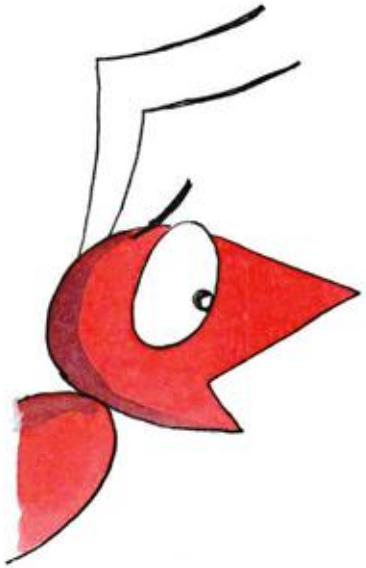

और इस तरह पहली बार चींटियों के
उस समूह ने उँगलियों की खोज की.

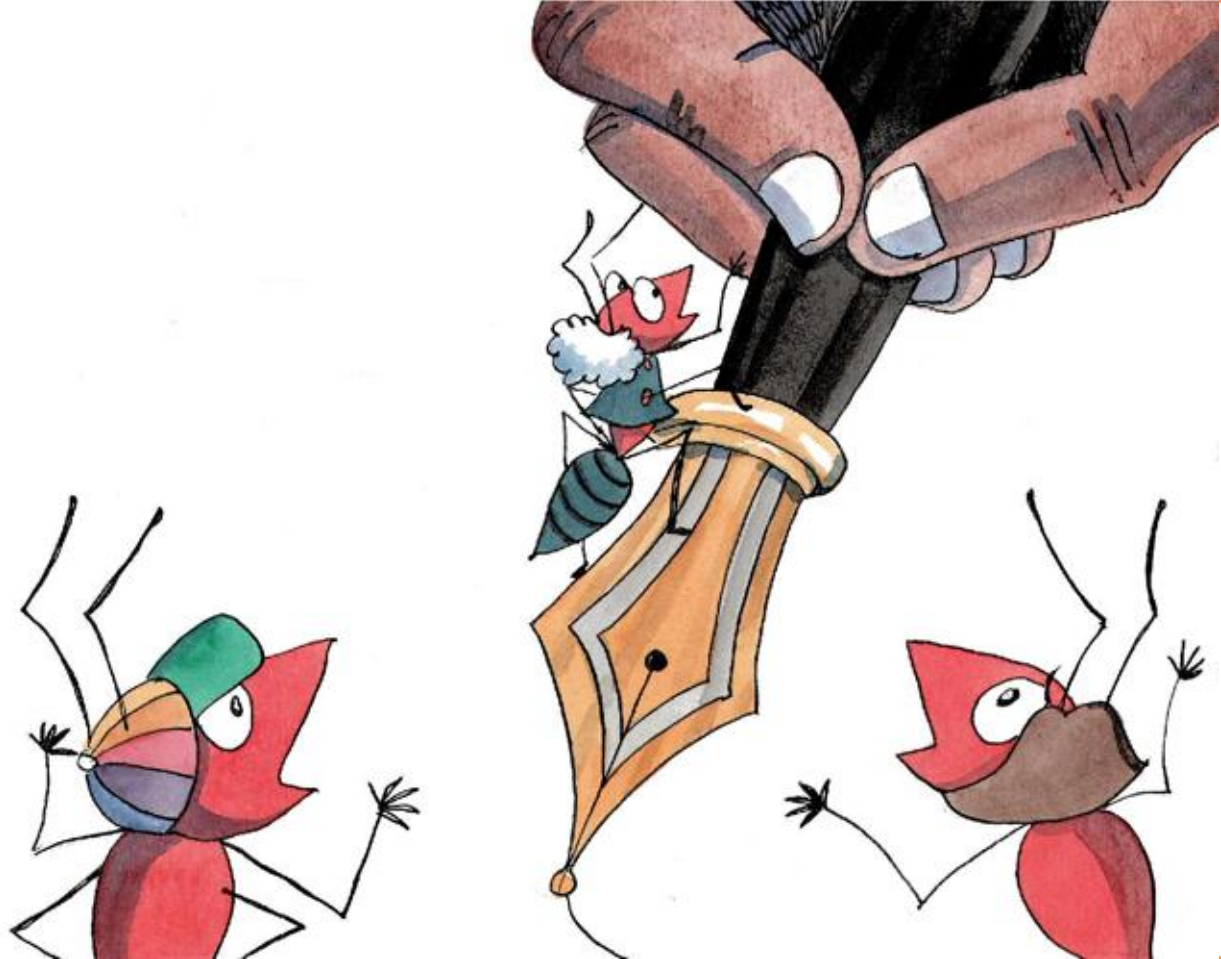

फिर क्या था, एक अन्य चींटी ने वैज्ञानिक शोध के दायरे को और व्यापक बनाने की कोशिश की.

फिर उँगलियों को समझने के लिए वो उँगलियों पर चढ़ी और उनपर खूब घूमी.

क्योंकि खोजी चींटियें इस काम में माहिर होती हैं.

सभी उँगलियों की जांच-पड़ताल करने के बाद चींटी इस निष्कर्ष पर पहुंची कि सभी उँगलियां एक हथेली से जुड़ी थीं.

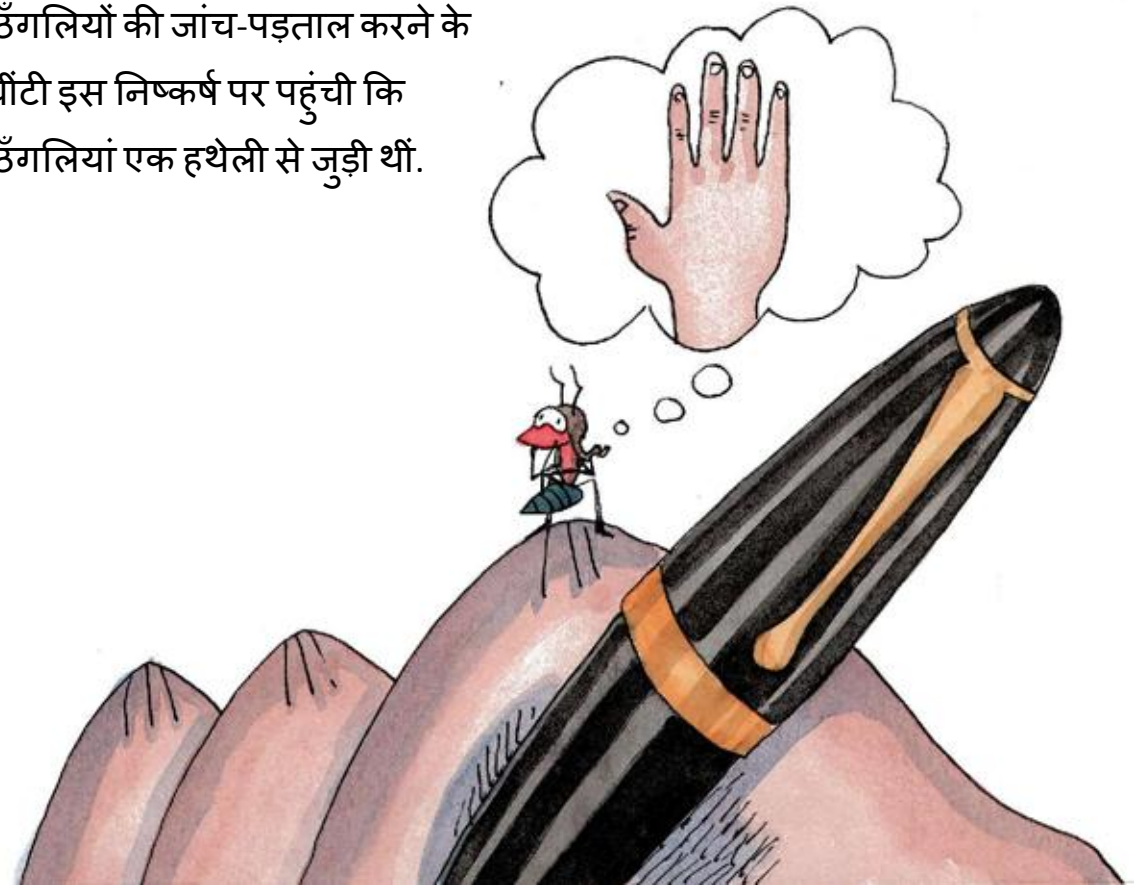

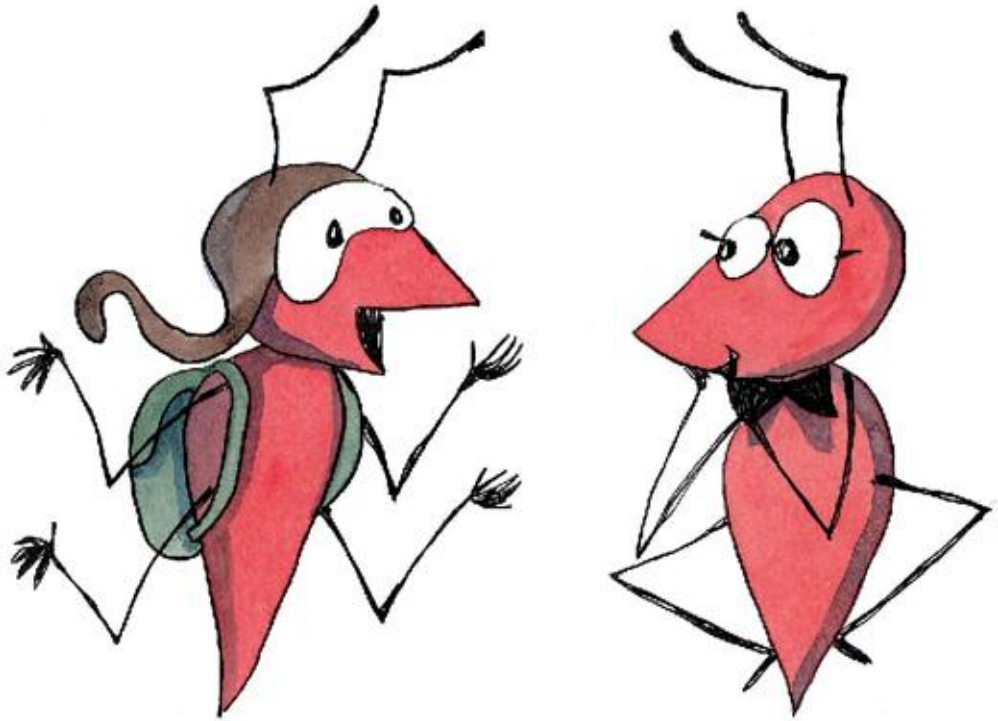

यह समझने के बाद वो इस ताज़ी खबर
को फ़ैलाने के लिए दौड़ी-दौड़ी गई.

उसे जो पहली चींटी दिखी
उसने उसे वो खबर सुनाई.

नई चींटी हथेली का वर्णन सुनकर बेहद खुश हुई.
उसने पहली चींटी को उसकी खोज और पैनी
नज़र के लिए बधाई दी.

जैसे-जैसे समय बीता, अन्य चीटियों ने भी
अपनी समझ के दायरे का विस्तार किया.

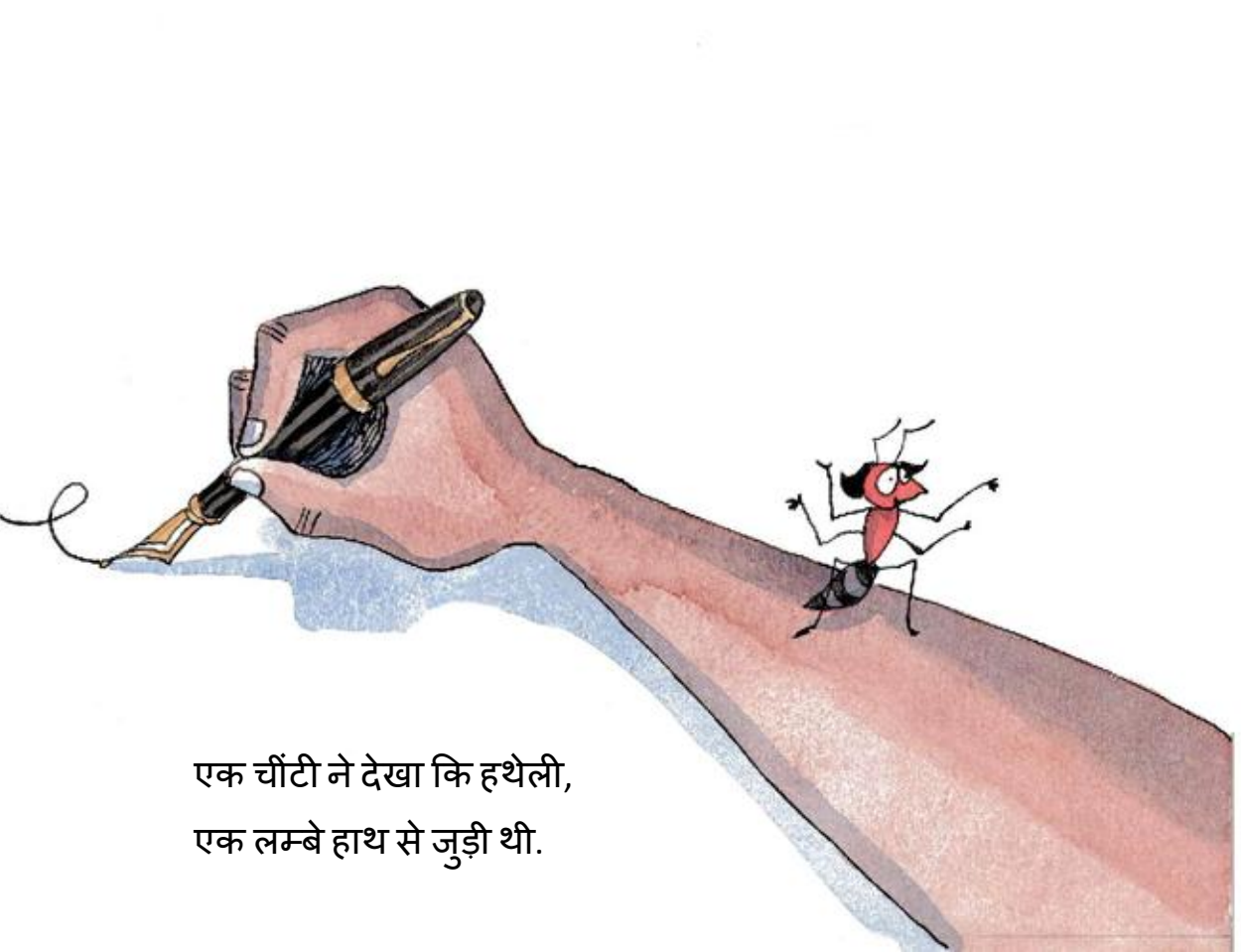

एक चींटी ने देखा कि हथेली,
एक लम्बे हाथ से जुड़ी थी.

दूसरी चींटी ने खोजा कि वो हाथ, कंधे से जुड़ा था.

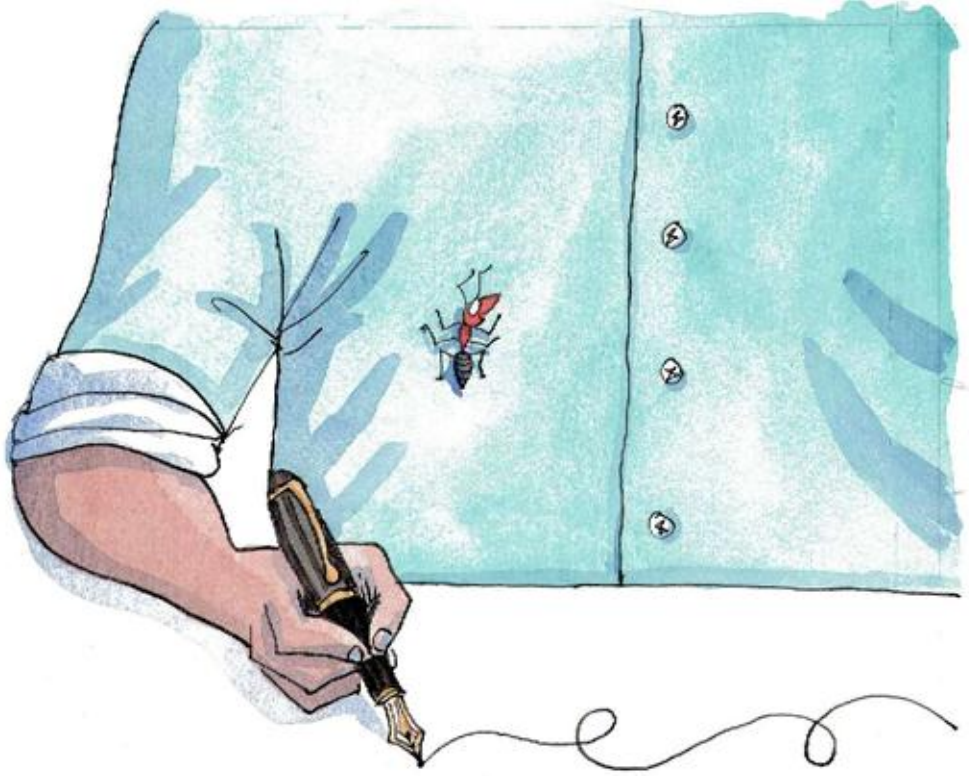

तीसरी चींटी ने खोजा कि असल में एक नहीं, दो हाथ थे.

चीटियों ने खोजा कि हाथों के अलावा पैर भी थे.
पर वो लिखाई का कुछ काम नहीं करते थे.

जैसे-जैसे शोध आगे बढ़ा,
वैसे-वैसे चींटियों ने लिखाई
के बारे में बहुत कुछ
सीखा-समझा.

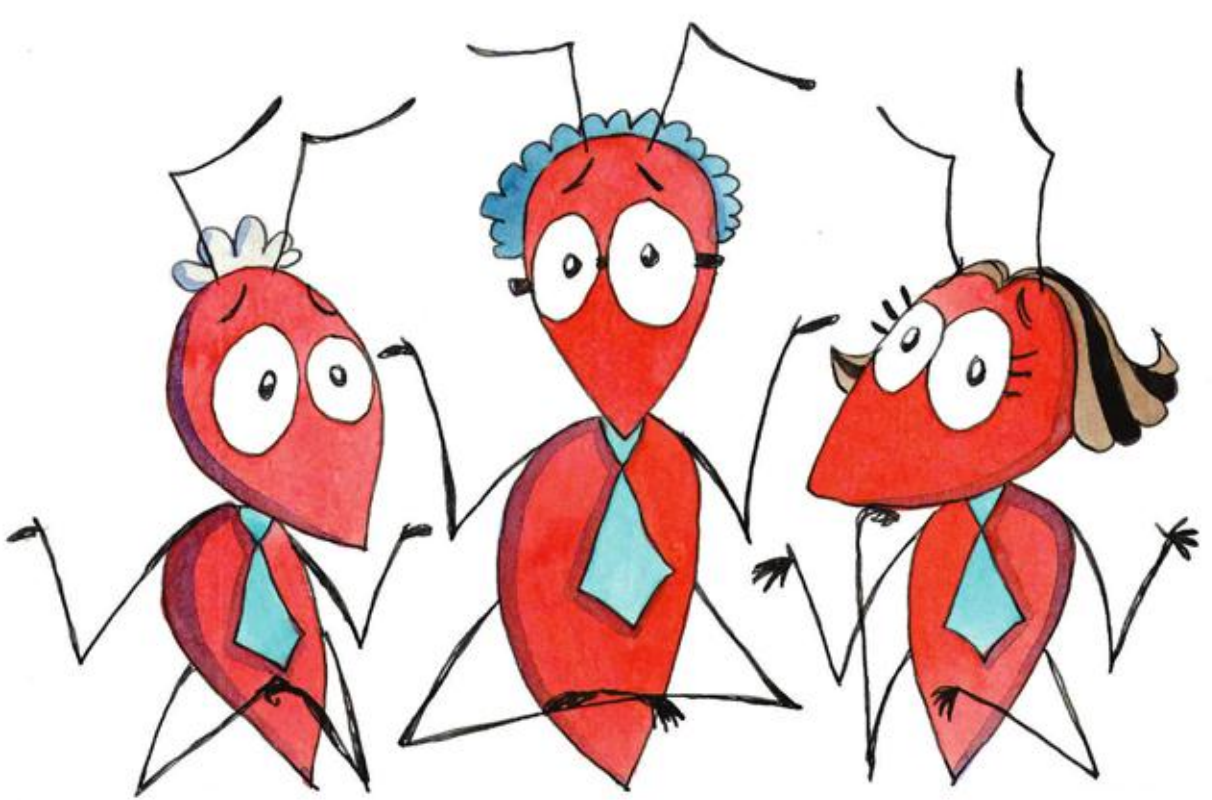

पर क्योंकि यह सारा शोध विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक था,
इसलिए पेन ने क्या लिखा, उसके बारे में चीटियां कुछ नहीं जान पाईं. . .

इस सब शोध के बाद अगर आप किसी चींटी से कोई शब्द पढ़ने को कहेंगे . . .

. . . या फिर पेन की चीता-पोती क्या कहने की कोशिश कर रही थी यह पूछेंगे . . .

. . . तो चीटियां आपकी ओर सिर्फ घूरेंगी.. . .

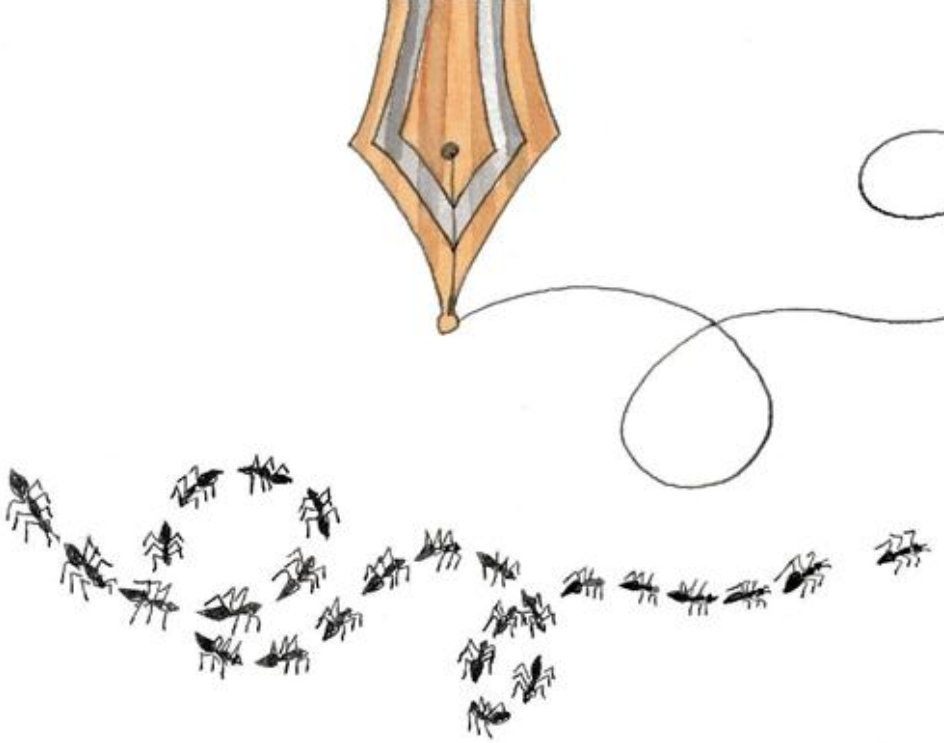

. . . और आपसे कहेंगी कि आप चींटियों
के शोध के बारे में कुछ भी नहीं समझते!

अंत